विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ **दिनांक -25-06-2020**

विषय -हिन्दी (व्याकरण) **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

सुप्रभात बच्चों आज अनुनासिक (चंद्रबिन्दु) के बारे में अध्ययन करेंगे, मुझे उम्मीद हैं की आप सभी ध्यान पूर्वक अध्ययन करेंगे और समझने का प्रयास करेंगे।

अनुनासिक (चंद्रबिन्दु)

अनुनासिक (चंद्रबिन्दु) की परिभाषा

चंद्रबिन्दु (अनुनासिक) वे शब्द जिनका उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है, उन्हे अनुनासिक कहते हैं।जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है वे अनुनासिक कहलाते हैं। जब किसी स्वर का उच्चारण नासिका और मुख दोनों से किया जाता है तब उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगा दिया जाता है। जैसे-हँसना, आँख,चाँद। इनका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है।

अनुनासिक का प्रयोग

जिस प्रकार अनुनासिक की परिभाषा में बताया गया है, कि जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, वे अनुनासिक कहलाते हैं और इन्हीं स्वरों को लिखते समय इनके ऊपर अनुनासिक के चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है।

यह ध्वनि (अनुनासिक) वास्तव में स्वरों का गुण होती है। अ, आ, उ, ऊ, तथा ऋ स्वर वाले शब्दों में अनुनासिक लगता है।

जैसे -

कुआँ, चाँद, अँधेरा आदि।

अनुस्वार(बिन्दु)और अनुनासिका (चंद्रबिन्दु) में अंतर

अनुनासिका स्वर है, जबकि अनुस्वार मूलत: व्यंजन। इनके प्रयोग के कारण कुछ शब्दों के अर्थ में अंतर आ जाता है।

जैसे –

हंस (एक जल पक्षी), हँस (हँसने की क्रिया)।

अंगना (सुंदर अंगों वाली स्त्री), अँगना (घर के बाहर खुला बरामदा)

अनुनासिका (चंद्रबिंदु) को परिवर्तित नहीं किया जा सकता, जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

अनुनासिका का प्रयोग केवल उन शब्दों में ही किया जा सकता है, जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगी हों।

जैसे- अ, आ, उ, ऊ, ऋ

उदाहरण के रूप में - हँस, चाँद, पूँछ

शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिका के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है। जैसे - गोंद, कोंपल, जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है।

गृहकार्य

इसे स्पष्ट अक्षरों में लिखकर अपनी कापी में याद कीजिए।